भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद

(पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय)

आधुनिक नर्सरी की स्थापना हेतु क्षमता निर्माण तथा रोपण सामग्री उत्पादन में माइकोराइजल जैव प्रौद्योगिकी का उपयोग: एक रिपोर्ट

अक्टूबर 15, 2025

भा.वा.अ.शि.प.- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (हि.व.अ.सं.) ने **"आधुनिक नर्सरी की स्थापना हेतु क्षमता निर्माण तथा रोपण सामग्री उत्पादन में माइकोराइजल जैव प्रौद्योगिकी का उपयोग"** विषय पर **एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम** का आयोजन अक्टूबर 15, 2025**, बिलासपुर में** किया।

इस कार्यक्रम में बिलासपुर वन वृत्त के **45 वन अधिकारी, कर्मचारी एवं फील्ड स्टाफ** ने भाग लिया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य आधुनिक नर्सरी की स्थापना और माइकोराइजल जैव उर्वरकों के उपयोग पर जागरूकता बढ़ाना था।

कार्यक्रम के समन्वयक, डॉ. प्रवीन रावत, वैज्ञानिक- सी, हि.व.अ.सं., शिमला, ने मुख्य अतिथि श्री राजीव कुमार, वन मंडलाधिकारी बिलासपुर, विशिष्ट अतिथि श्री मनीष परवासी, वन मंडलाधिकारी (मुख्यालय) एवं सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। डॉ. रावत ने आदर्श नर्सरी की स्थापना, आवश्यकताएं और अपेक्षाएं विषय पर अपनी प्रस्तुति दी। इस विषय में उन्होंने आदर्श नर्सरी के स्थापना तथा इनके चरणबद्ध उन्नयन के विषय में विस्तृत जानकारी दी। अपने व्याख्यान में उन्होने यह भी बताया कि मॉडल नर्सरी की स्थापना वन विभाग के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है, जो उच्च गुणवत्ता वाले पौधों के उत्पादन को सुनिश्चित कर वनीकरण एवं पुनर्वनीकरण कार्यक्रमों की सफलता में निर्णायक भूमिका निभाएगी। मॉडल नर्सरी स्थानीय एवं दुर्लभ प्रजातियों के संरक्षण के साथ-साथ जैव विविधता को भी सशक्त बनाने में भी सहायक सिद्ध होगी। आधुनिक तकनीक, वैज्ञानिक प्रबंधन एवं गुणवत्तापूर्ण बीज सामग्री के प्रयोग से नर्सरी उत्पादन दक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। इस पहल से स्थानीय लोगों के लिए प्रशिक्षण एवं रोजगार के नए अवसर उत्पन्न होंगे। समग्र रूप से, मॉडल नर्सरी पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने और सतत वन प्रबंधन को सशक्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण नवाचार है। डॉ. रावत ने यह भी बताया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम हिमाचल प्रदेश सरकार के हिमाचल प्रदेश क्षतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन और योजना प्राधिकरण (CAMPA) के अंतर्गत वित्त पोषित परियोजनाओं के तहत आयोजित किया जा रहा है।

उसके बाद डॉ अश्वनी तपवाल, वैज्ञानिक-एफ ने आधुनिक नर्सरी की स्थापना में माइकोराइजा के महत्व और उपयोग पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने 'हिम मृदा संजीवनी' नामक माइकोराइजल जैव उर्वरक विकसित किया है। यह एक मिट्टी और वर्मीक्यूलाईट वाहक आधारित फॉर्मूलेशन है, जिसका उपयोग औषधीय पौधों, सब्जियों और चौड़ी पत्ती वाली फसलों की जैविक खेती में किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, संस्थान ने 'हिम ग्रोथ बूस्टर' नामक माइकोराइजल जैव उर्वरक भी विकसित किया है, जिसे शंकुधारी पौधशालाओं में ग्रोथ बूस्टर के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इससे नर्सरी में शंकुधारी पौधों की वृद्धि अवधि कम होगी, जिससे रोपण बेहतर तरीके से स्थापित हो सकेंगे।

श्री राजीव कुमार, वन मंडलाधिकारी बिलासपुर, ने अपने उद्घाटन भाषण बिलासपुर वन वृत्त में वनो की वर्तमान स्थिति तथा क्षरित वनों की उत्पादकता बढ़ाने में गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने उच्च उत्पादकता के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु सहयोगात्मक प्रयासों को आरंभ करने हेतु ऐसे प्रशिक्षणों की आवश्यकता पर भी बल दिया। इस दिशा में मॉडल नर्सरी की स्थापना व माइक्रोराइजल जैव तकनीक की दिशा में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के अनुसंधान कार्यों की सराहना की तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन के लिए हि.व.अ.सं., शिमला का आभार प्रकट किया।

डॉ. संदीप शर्मा, निदेशक, हि.व.अ.सं., शिमला, ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने कार्बनिक खाद, वर्मीकम्पोस्ट निर्माण और आधुनिक नर्सरी की स्थापना के लिए उपयोगकर्ता के अनुकूल तकनीकों पर चर्चा की। इसके अतिरिक्त, उन्होंने हिमाचल प्रदेश के प्रमुख कॉनिफ़र प्रजातियों की कंटेनरीकृत नर्सरी तकनीकों पर अपने अनुभव साझा किए।

इसके बाद, प्रतिभागियों से कार्यक्रम के प्रति विचार मांगे गए तथा विशेषज्ञों द्वारा उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर भी दिए गए। श्री राजीव कुमार, वन मंडलाधिकारी बिलासपुर, ने सभी प्रतिभागियों को भागीदारी प्रमाण पत्र वितरित किए।

अंत में, डॉ. प्रवीन रावत, वैज्ञानिक-सी ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के वित्तपोषण के लिए प्रतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन एवं योजना प्राधिकरण, हिमाचल प्रदेश और इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग देने के लिए वन विभाग हिमाचल प्रदेश का भी धन्यवाद किया।

****

<u>प्रशिक्षण कार्यक्रम की कुछ झलकियाँ</u>

वन कर्मचारियों को मिला आधुनिक तकनीक का ज्ञान

संवाद सहयोगी, जागरण • विलासपुर : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से आधुनिक नर्सरी की स्थापना के लिए क्षमता निर्माण तथा रोपण सामग्री उत्पादन में माइकोराइजल जैव प्रौद्योगिकी का उपयोग विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन बिलासपुर में किया गया। प्रशिक्षण में बिलासपुर वन वृत के लगभग 40 वन अधिकारी, कर्मचारी एवं फील्ड स्टाफ ने भाग लिया।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को आधुनिक नर्सरी की स्थापना, माइकोराइजल जैव उर्वरकों के उपयोग एवं रोपण सामग्री उत्पादन की नई तकनीकों के प्रति जागरूक करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्थान के वैज्ञानिक–सी और कार्यक्रम समन्वयक डा. प्रवीन रावत के स्वागत भाषण से हुआ। उन्होंने सभी प्रतिभागियों, मुख्य अतिथि राजीव कुमार वन मंडलाधिकारी बिलासपुर, तथा विशिष्ट अतिथि मनीष परवारी, वन मंडलाधिकारी के आगमन पर आभार व्यक्त किया। डा. रावत ने बताया कि माइकोराइजा पौधों की जड़ों के साथ सहजीवी रूप में कार्य कर मिट्टी से पोषक तत्वों का बेहतर अवशोषण सुनिश्चित करती है, जिससे पौधों की वृद्धि तेज और स्वस्थ होती है। डीएफओ राजीव कुमार ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के अनुसंधान कार्यों की सराहना की। इस अवसर पर फील्ड स्टाफ और वैज्ञानिक उपस्थित रहे।